Indian J. Soc &.Pol. 1(2):67-68:2014 **ISSN : 2348-0084**

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका

कमलेश राम[1]

[1]शोध छात्र ,अर्थशास्त्र विभाग, श्री म रा दा स्ना महाविद्यालय भुड़कुड़ा, गाजीपुर, उ0 प्र0 , भारत

पूर्वपीठिका

विश्व की अर्थ व्यवस्थाओं में भारत की अर्थ व्यवस्था का विशेष स्थान है। भारत की अर्थ व्यवस्था को कृषि प्रधान माना गया है। कृषि को मुख्य माना गया इसके पीछे कहा जा सकता है कि कृषि के लिए सभी आवश्यक चीजे जैसे भूमि, वर्षा, कृषि यंत्र कीट नाशक दवाएं, यातायात के साधन भौगलिक परिस्थितिया सभी साथ देती है। इसलिए कृषि के विकास के लिए कई अन्य अनुसंधान केन्द्रो की स्थापना भी किया। जिसमें से एक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूसा नई दिल्ली आज भी विख्यात है। कृषि से देश की आर्थिक स्थिति तो मजबूत होती है और देश का सर्वोत्तम विकास भी होता है।

विश्व की अर्थ व्यवस्थाओं में भारत की अर्थ व्यवस्था का विषेश स्थान है। भारत की अर्थ व्यवस्था को कृषि प्रधान माना गया है। कृषि को मुख्य माना गया इसके पीछे कहा जा सकता है कि कृषि के लिए सभी आवश्यक चीजे जैसे भूमि, वर्षा, कृषि यंत्र कीट नाशक दवाएं, यातायात के साधन भौगलिक परिस्थितिया सभी साथ देती है। इसी मकसद से अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिए आये थे और धीरे–धीरे यहॉ के शासक बन गये। तब अंग्रजो को इसका एहसास नहीं था कि एक दिन हमे बोरिया विस्तर बांधकर जाना होगा। इसलिए कृषि के विकास के लिए कई अन्य अनुसंधान केन्द्रो की स्थापना भी किया। जिसमें से एक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूसा नई दिल्ली आज भी विख्यात है। कृषि से देश की आर्थिक स्थिति तो मजबूत होती है और देश का सर्वोत्तम विकास भी होता है।

पर्यावरणीय क्षति के कारण आज कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था कहना शायद उचित नहीं लग रहा है। क्योंकि मौसम के बदलाव से कृषि कार्य प्रभावित हो जाता है। चूकि भारत गरीबो का देश भी कहा जाता है जिनके पास वर्षा के अलावा और कोई सिचाई हेतु विकल्प नहीं है।भारत के कई राज्यों जिसमें उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ आदि है जहां पर वर्षा के अभाव में भुखमरी की स्थिति आ जाया करती है। जब सूखा का कहर देश में या राज्यों में पड़ता है तो कई चीजे प्रभावित होती है। वारिश के अभाव में देश भर के जलाश्यों में जल कम संग्रह हो पाता है। जिससे पीने का पानी भी उपलब्ध होने का संकट गहरा जाता है। सूखे में पशुओं के लिए चारे का संकट भी पैदा होता है, जिससे दूध का उत्पादन तो घटता ही है, खुद, पशुओं का जीवन भी संकट ग्रस्त की रोजी–रोटी भी छिन जाती है।(अमर उजाला,17 जुला 2015)

देश में शिक्षा, स्वास्थ्य में कमी आने लगती है। देश की विकास दर कम हो जाती है। दूसरे देशो से खाद्यान वस्तुओं का आयात करना पडता है, मंहगाई बढ़ जाती है। देश का विकास रुक जाता है। एसे में कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था कहना कहा तक है न्यायोचित है। बदलते समय में कृषि का स्थान उद्योगो की तरफ जा रहा है जो कि यह भी सही नहीं है क्योकि उद्योगो का कच्चा माल भी कृषि से ही प्राप्त होता है। भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास को देखे तो पिछले कई सदियों से भारत एक गरीब देश रहा है हालाकि कभी–कभी इसकी समृद्धि की भी इतिहास में चर्चा है। अगर विदेशी यात्रियों के भारत वर्णन पर ध्यान दे और भारत पर आक्रमण करने वालो की बात माने तो संकेत मिलता है। कि कम से कम 17 वीं शताब्दी तक भारत एक समृद्ध देश रहा जिसे सोने की चिड़िया कहा जा सकता है।

आरगेनाइजेशन फार इकोनामिक कारपोरेशन एण्ड डेवलपमेंट के एक प्रकाशन के अनुसार वर्ष 1700 के आसपास भारत की अर्थ व्यवस्था 90.8 अरब अमरीकी डालर के बराबर थी जो उस समय के दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में 24.4 प्रतिशत थी।(मेडीसन,2001)

वर्तमान भारत की अर्थव्यवस्था का सकल घरेलू उत्पाद 5 से 6 प्रतिशत के बीच है। देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत लाने के लिए प्रधान मंत्री जी कुछ ऐसे कदम उठा रहे है जो जनता को कष्ट तो अवश्य हो रहा है जैसे– रेल किराया का बढ़ना, तेल ा मूल्य बढ़ना, खाद्य वस्तुओं की कीमतो में क्रमिक बढ़ोतरी इत्यादि है। लेकिन विगड़ी हुई हालात से निपटने के लिए ऐसे निर्णय लेना

1 : Corresponding Author

नीतिगत है। जिसका फायदा कुछ वर्षो में जनता को मिलने लगेगा। ऐसी उम्मीद किया जा सकता है। वर्ष 2014 को देखे तो कम वर्षा होने के कारण कृषि प्रभावित हुई है, इसे सूखा घोषित किया जा रहा है, इससे भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती कमजोर होगी।

कृषि वैज्ञानिक प्रो0 पदमाकर त्रिपाठी कहते है कि पचास फीसदी कृषि क्षेत्र असिंचित हो या वहा बारिश चालीस फीसदी से कम हुई तो सूखा घोषित होता है। अभी तक (जुलाई 2014) पश्चिम में सामान्य से 73 प्रतिशत बुन्देलखण्ड में 72 प्रतिशत कम बारिश हुई है। आगे भी पूर्वी उत्तर–प्रदेश के मुकाबले पश्चिमी यूपी बुन्देलखण्ड व मध्य यूपी में बहुत अच्छी बारीश के आसार नहीं है। (हिन्दुस्तान,21अग2014). इस प्रकार हम कह सकते हे कि देश में गरीबी का प्रतिशत बढेगा। अभी हाल में बजट वर्ष 2014 नरेन्द्र मोदी सरकार की पेश की गई है। जिसमें कम्प्यूटर टेलीविजन, मोबाईल फोन इत्यादि सस्ते किये गये है। यह गरीबो के लिए कितना लाभ पहुचायेगा? इसके जगह पर यदि अनाज के दाम कम कर दिये गये होते तो गरीबो को लाभ अवश्य मिलता। हाल में पेंश ''रंगराजन कमेटी ने गरीबी रेखा के आकड़े पेश किए है जिसमें शहरो में 47 और गांवों में 32 रुपये हर रोज खर्च करने की क्षमता वाले लोग निर्धन नहीं है।(रंगराजन कमेटी रिपोर्ट पृ 177)यह गरीबी का निर्धारण भारतीय अर्थव्यवस्था को खोखला कर देगा। इसी प्रकार पिछले सरकार में भी 27 रुपये खर्च करने वाला गरीब नहीं है यह रिपोर्ट योजना आयोग ने पेश किया था। जिसका देश में चारो तरफ चर्चाए हुई थी। हमारे देश में लगभग 70 प्रतिशत लोग कृषि कार्य में लगे है। फिर भी कोई सरकार रही हो उनका खयाल कम की है। आम आदमी के लिए सटीक कृषि शिक्षा स्वास्थ्य और सुरक्षा नीतियों के अभाव में बहुत पिछड़ते जा रहे है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जिसका सरकार हमेशा अनदेखा किया है। साथ ही साथ पर्यावरण अर्थात मौसम का प्रतिकूल होना भी कृषि को प्रभावित कर रहा है। जिसका असर आम जनता के ऊपर पढ़ने वाला है। गोदामों में रखे अनाज अर्थव्यवस्था को मजबूत नहीं कर पायेगें बल्कि कुछ समय के लिए भोजन की उपलब्धता हो सकती है। इसके लिए सभी को सोचना होगा कि हमारा भविष्य क्या होगा ? उत्तर प्रदेश की स्थिति को देखे तो कृषि क्षेत्र के विकास के लिए किये गये प्रयासो के बावजूद प्रतिकूल मौसम से कृषि उत्पादन दुष्प्रभावित होता है। उ0प्र0 में वर्ष 2001–2002 के अन्तर्गत 44136 हजार मी0 टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ था।

वर्ष 2004–05 में खाद्यान्न का उत्पादन घटकर 39997 हजार मी0 टन ही रह गया। इसके उपरान्त इसमें वृद्धि दृष्टिगोचर हुई और यह वर्ष 2008–09 में 47382 हजार मी0 टन, वर्ष 2009–10 में पुनः घटकर 44664 हजार मी0 टन एव0 वर्ष 2010–11 में बढ़कर 47316 हजार मी0 टन हो गया। .यह तो सरकारी आकड़े उत्पादन को दर्शा रहे है। इतना अधिक उत्पादन होने के बावजूद भी कुछ ऐसी खबरे पढ़ने को मिल जाती है कि भुख और कुपोषण का शिकार परिवार ने आत्म हत्या कर दी है ऐसी खबरे अखबारों में पढ़ते है। जब फसलो के उत्पादन के विपरीत मौसम होगा तो उत्पादन कम होगा और भुखमरी कूपोषण के शिकार व्यक्तियों की संख्या अधिक होगी। तब देश राज्य की विकास दर कम होगी और अर्थव्यवस्था डगमगा जायेंगी।

कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकारी प्रयास तो किये जा रहे है फिर भी इसे और बढ़ाने की जरुरत है। कृषि यन्त्रों कीट नाशको, सिचाई के साधनों अच्छे किस्म के बीजो पर मिलने वाली सब्सिडी का बढ़ाना होगा। सिचाई के साधानो को बढ़ावा देना होगा। ताकि वर्षा का असर कम हो जाय। अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान महत्वपूर्ण है और रहेगा। देश के नीतिगत ढ़ाचे को निर्माण करने वाले लोगो को इस विषय पर कार्य करने की जरुरत है ताकि देश का सर्वाणीय विकास सरलता से हो पाये और दुनिया के देशों मे भारत की अर्थव्यवस्था का स्थान विकसित श्रेणी में आ जायें। यहां की जनता को सभी सुखसुविधाए आसानी से उपलब्ध हो पायें।

सन्दर्भ

अमर उजाला वाराणसी प्रवाह जुलाई 2014।

एंगेस मेडीसन, *द वर्ल्ड इकोनामी ए मिलेनियम पर्सपेक्टिव* ओई सीडी, 2001

हिन्दुस्तान, वाराणसी

रंगराजन कमेटी, भारत सरकार